23/4/21 Part B' Chapter - 5 INTER

Long Answers

Q 1. नेहरू के बाद कांग्रेस में लोकतांत्रिक उत्तराधिकारी का वर्णन कीजिए।

Ans → नेहरू जी कांग्रेस पार्टी के अद्वितीय नेता थे। 1964 में उनकी मृत्यु के बाद यह सवाल पैदा हुआ कि किसे उनका उत्तराधिकारी बनाया जाए। पुराने नेताओं में मोरार जी देसाई, जगजीवन राम, गुलजारी लाल नंदा ने अपनी इच्छा व्यक्त की, लेकिन पार्टी के अध्यक्ष (कामराज) शास्त्री जी को उनका उत्तराधिकारी बनाया। लगभग डेढ़ साल बाद शास्त्री जी की मृत्यु के बाद फिर वही वही सवाल पैदा हो गया। इस बार मोरार जी देसाई खुलकर सामने आए और उन्होंने अपनी इच्छा व्यक्त की। लेकिन पार्टी अध्यक्ष ने इंदिरा गांधी को उत्तराधिकारी बनाया। दोनों अवसरों पर सारा काम शांतिपूर्ण व लोकतांत्रिक तरीके से हो गया।

Q 2. राजनीतिक दल-बदल किसे कहते हैं? इसके क्या परिणाम हुए?

Ans → जब सांसद या विधायक अपनी पार्टी छोड़ कर किसी अन्य दल में शामिल हो जाता है

या अपनी अलग पार्टी बना लेता है तथा उसके ऐसे काम से कोई सरकार बनती है या गिर जाती है तो उसे राजनीतिक दल-बदल का खेल कहते हैं। सारा प्रयोजन सत्ता प्राप्त करने हेतु किया जाता है। इसी को 'आया राम, गया राम' की राजनीति भी कहते हैं। कोई अपनी पार्टी में अलग या पार्टी को छोड़कर अन्य पार्टी में चला गया। 1967 के चुनावों के बाद ऐसा काफी बहुत तेजी से हुआ। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, बिहार, मध्य प्रदेश, उड़ीसा जैसे राज्यों में कांग्रेस की सरकारें गिर गयी तथा उनकी जगह गठबंधन सरकारें बनी। 1971-72 में कांग्रेस व्यवस्था की बहाली से इस पर रोक लगी।

Q3 1966 में इंदिरा गांधी को भारत का प्रधान मंत्री बनवाने में वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं ने क्यों सहयोग दिया था?

Ans 1966 में इंदिरा गांधी को भारत का प्रधान मंत्री बनवाने में वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं ने विशेष सहयोग किया। कांग्रेस के इन वरिष्ठ नेताओं ने संभवतः यह सोचकर उनका समर्थन किया था कि प्रशासनिक और राजनीतिक मामलों में खास अनुभव न होने के कारण समर्थन और दिशा निर्देशन के लिए इंदिरा गांधी उन पर निर्भर रहेगी।

Scanned by CamScanner

Part B - ch-5

classmate
Date
Page

Q.4 कांग्रेस व्यवस्था की पुनः स्थापना का क्या अर्थ है?

Ans → स्वतंत्रता के बाद भारतीय कांग्रेस सत्ता में रही। 1964 में नेहरू की मृत्यु के बाद, उसके पास चमत्कारी नेतृत्व न रहा। इसीलिए 1967 के चुनाव में उसे हार का मुँह देखना पड़ा। केन्द्र पर इंदिरा गांधी की सरकार बनी रही, लेकिन राज्यों में दल-बदल के कारण कांग्रेस की सरकार गिरी। कांग्रेस-विरोधी पार्टियों व गुटों ने एकजुट हो कर कई राज्यों, जैसे - उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, हरियाणा व उड़ीसा में अपनी सरकार बनायी। लेकिन 1971 के चुनावों में कांग्रेस को पुनः विशाल बहुमत मिला। केन्द्र पर उसकी सबल सरकार बनी। 1972 के विधान सभा चुनावों में कांग्रेस ने राज्यों में भी अपनी सरकारें बना ली। इस तरह एक बार फिर सारे देश पर कांग्रेस का प्रभुत्व स्थापित हो गया।

Q 5. 1971 के चुनावों के परिणामस्वरूप बदली हुई कांग्रेस व्यवस्था की क्या प्रकृति थी?

Ans → 1971 के संसदीय चुनाव में नई कांग्रेस को अप्रत्याशित ~~सफलता~~ सफलता मिली।

*

अब लोकसभा में उसका बहुमत स्पष्ट हो गया तथा इंदिरा गांधी के सक्षम नेतृत्व की स्थापना हुई। अनेक वरिष्ठ कांग्रेसी नेता पुरानी कांग्रेस में चले गये थे। अतः इंदिरा गांधी अपनी पार्टी की बेजोड़ नेता बन गयी। नई कांग्रेस को इंदिरा कांग्रेस भी कहा गया। तथा कुछ अंतराल के बाद कांग्रेस के अध्यक्ष - देवकांत बरुआ ने यहाँ तक कहा कि 'इंडिया का अर्थ है इंदिरा'। अब इंदिरा सरकार ने अनेक समाजवादी कार्यक्रम अपनाए जैसे - भूतपूर्व रियासतों के राजाओं के प्रिवी पर्स व विशेषाधिकार समाप्त किए गए। 20 सूत्रीय कार्यक्रम लागू किया गया ताकि गरीबी हटाओ का वचन पूरा किया जा सके।

Q.6. 1969 में कांग्रेस के विभाजन के क्या कारण थे?

Ans → कांग्रेस में प्रभावशाली नेताओं का गुट जिसे 'सिंडीकेट' के नाम से भी जाना जाता था, ने इंदिरा गांधी को भारत का प्रधानमंत्री बनवाने में विशेष सहयोग किया था। कांग्रेस के इन वरिष्ठ नेताओं ने संभवतः यह सोच कर उनका समर्थन किया कि -

*

Scanned by CamScanner

*

प्रशासनिक और राजनीतिक मामलों में खास अनुभव न होने के कारण समर्थन और दिशा निर्देशन के लिए इंदिरा गांधी उन पर निर्भर रहेंगी और वे उन्हें अपने अनुसार संचालित करने में कामयाब होंगे। लेकिन प्रधानमंत्री बनने के बाद इंदिरा गांधी ने स्वयं स्वतंत्र निर्णय लेने शुरू कर दिये जिससे गुट में उनके संबंध बिगड़ने लगे।

अन्ततः 1969 को राष्ट्रपति पद के चुनाव में उम्मीदवार के प्रश्न पर टकराव चरम पर पहुँच गया। कांग्रेस के अधिकृत उम्मीदवार नीलम संजीव रेड्डी इंदिरा गांधी के सीधे विरोध के कारण चुनाव हार गये और वी० वी० गिरि विजयी हुए। इसी तरह इन्हीं कारणों की वजह से कांग्रेस विभाजित हो गयी।